2025 यादगार दिवस सम्मिश्रण सम्मेलन के लिए मुख्य कथन

बाइबल एक प्रणय है,
सबसे शुद्ध और सबसे पवित्र अर्थ में,
एक सार्वभौमिक जोड़े की—मसीह में परमेश्वर दुल्हे के रूप में
और परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोग दुल्हन के रूप में—प्रभु की पुनः प्राप्ति का लक्ष्य।

पुन:प्राप्ति में प्रभु का प्राथमिक कार्य
हमें उसकी महिमामय दुल्हन बनने के लिए तैयार करने का उसका वास्तविक कार्य है;
इफिसियों 5:26 में बताए गए निरंतर, स्वभावगत पवित्रीकरण के अलावा,
दुल्हन को तैयार करने का कोई तरीका नहीं है और इसलिए,
प्रकाशितवाक्य 19:7-9 को पूरा करने का कोई तरीका नहीं है।

जैसा कि नए नियम में उपयोग किया गया है,
***परिपक्व* शब्द का तात्पर्य विश्वासियों के मसीह के जीवन में पूर्ण-विकसित और सिद्ध होने से है,**
जिसे उन्होंने पुनरुज्जीवन के समय प्राप्त किया था।

प्रभु की पुन:प्राप्ति मसीह की दुल्हन की तयारी के लिए है;
अंतत, हम अद्भुत शूलम्मिन में अनुरूप होंगे, जो,
सुलैमान की प्रतिलिपि के रुप में, मसीह की अर्धांगिनी, दुल्हन के रुप में
नये यरुशलेम की सबसे महान और परम चित्र है।

यादगार दिवस सम्मिश्रण सम्मेलन के लिए
संदेशों की रूपरेखा
मई 23-26, 2025

सामान्य विषय:
दुल्हन की तयारी

संदेश एक

दुल्हन—प्रभु की पुन:प्राप्ति का लक्ष्य

पवित्रशास्त्र पठन: प्रक. 19:7-9; यूह. 1:29; 3:29; श्रेष्ठ. 1:2-3; 8:14

I. बाइबल एक प्रणय है, सबसे शुद्ध और सबसे पवित्र अर्थ में, एक सार्वभौमिक जोड़े की—मसीह में परमेश्वर दुल्हे के रूप में और परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोग दुल्हन के रूप में—प्रभु की पुनःप्राप्ति का लक्ष्य।

A. सदियों से परमेश्वर का मनुष्य के साथ प्रणय रहा है; उसने मनुष्य को एक अर्धांगिनी पाने के उद्देश्य से सृजा—उत. 1:26।

B. परमेश्वर एक प्रेमी है, और उसने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में प्रेमी के रुप में सृजा, इसका अर्थ है की उसने हमें सृजा ताकि हम उससे प्रेम कर सके—मर. 12:30; इफ. 3:14-19।

C. सम्पूर्ण बाइबल एक दिव्य प्रणय है, और श्रेष्ठगीत इस प्रणय का संगृहीत रुप है—1:2-3; 8:14:

1. बाइबल एक प्रेमपूर्ण पुस्तक है, और प्रभु के साथ हमारा सम्बन्ध और अधिक प्रेमपूर्ण होने की जरूरत है।
2. यदि हमारे और प्रभु यीशु के बीच में कोई प्रणय नहीं है, फिर हम धार्मिक मसीही हैं, न की प्रेमपूर्ण मसीही—श्रेष्ठ. 1:2-3।
3. सर्वस्व में, *प्रणय* एक दिव्य प्रेमालाप का शब्द है; बाइबल में हम देखते हैं की परमेश्वर हमारे प्रेम की खोजी कर रहा है—2 कुर. 11:2।
4. श्रेष्ठगीत एक प्रणय से भी अधिक है, यह एक शानदार प्रणय है।

D. हम जिससे भी प्रेम करते हैं, हमारा पूरा हृदय, यहाँ तक कि हमारा पूरा अस्तित्व, उसी पर केन्द्रित, व्यस्त और उसी के द्वारा आविष्ट होता है—1 तीम. 6:10-11; 2 तीम. 3:2-4; 4:8, 10अ; तीत. 1:8:

1. "परमेश्वर से प्रेम करने का अर्थ है अपना पूरा अस्तित्व—आत्मा, प्राण और देह, हृदय, प्राण, मन और शक्ति के साथ (मर. 12:30)—पूरी रीति उसी पर लगा देना, अर्थात् अपना पूरा अस्तित्व उसी में लगा देना और उसी में खो जाना" (1 कुर. 2:9 पर पादटिप्पणी 3)।
2. प्रभु यीशु से प्रेम करने का अर्थ है उसकी सराहना करना, अपने अस्तित्व को उसकी ओर निर्देशित करना, उसके प्रति खुलना, उसका आनंद करना, उसे पहला स्थान देना, उसके साथ एक होना, उसे जीना और उसके जैसा बन जाना—मत. 26:6-13 2 कुर. 3:16; मर. 12:30; कुल. 1:18; 1 कुर. 6:17; फिलि. 1:20-21; *भजन*, #477, छंद 2।

II. प्रकाशितवाक्य 19:7-9 मसीह को दूल्हे के रूप में प्रकट करता है:

A. मेम्ने का विवाह परमेश्वर के नए नियम के गृहप्रबन्ध की पूर्णता का परिणाम है, जिसका उद्देश्य मसीह के न्यायिक छुटकारे और उसके दिव्य जीवन में जैविक उद्धार के माध्यम से उसके लिए एक दुल्हन, कलीसिया, प्राप्त करना है—उत. 2:22; रो. 5:10; प्रक. 19:7-9; 21:2, 9-11।

B. प्रकाशितवाक्य 19 में मसीह की दुल्हन सभी जयवन्त लोगों से बनी है—आआ. 7-9; प्रसं. उत. 2:22; मत. 16:18।

C. सभी जयवन्त लोग अपने आरंभिक और नए चरण में एक हजार वर्षों के लिए मसीह की दुल्हन के रूप में नया यरूशलेम होंगे—प्रक. 19:7।

D. अंततः, सभी विश्वासी नये यरूशलेम को परिपूर्ण करने और पूरा करने के लिए नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में अनन्त काल के लिए मसीह की पत्नी के रूप में जयवन्त लोगों के साथ शामिल हो जाएंगे—21:2, 9-11।

III. दुल्हन प्रभु की पुन:प्राप्ति लक्ष्य है—19:7-9:

A. "मेमने का विवाह आ पहुंचा है"—आ. 7ब:

1. अपने सुसमाचार की शुरुआत में, यूहन्ना मेम्ने और दूल्हे की बात करता है, और प्रकाशितवाक्य में वह कहता है कि मेम्ने का विवाह आ पहुंचा है—यूह. 1:29; 3:29।
2. अधिकांश संतों के उठा लिए जाने (प्रक. 14:16; 1 थिस. 4:15-16) और मसीह के न्याय आसन पर इनाम देने के लिए (प्रक. 11:18; 2 कुर. 5:10) न्याय के बाद, तुरंत बाद की घटनाओं में मेम्ने का विवाह शामिल होना चाहिए (प्रका. 19:7ब):
   a. यदि हमें मसीह के न्याय आसन पर इनाम मिलता है, तो हम विवाह भोज में भाग लेंगे।
   b. यदि हमें इनाम नहीं मिलता है, लेकिन प्रभु द्वारा अस्वीकृत कर दिया जाता है, तो हम नष्ट नहीं होंगे, बल्कि 1 कुरिन्थियों 3:15 में वर्णित नुकसान उठाएँगे।

B. "उसकी पत्नी ने अपने आप को तैयार कर लिया है"—प्रक. 19:7स:

1. *उसकी पत्नी* कलीसिया (इफ. 5:24-25, 31-32), मसीह की दुल्हन (यूह. 3:29) को संदर्भित करती है।
2. प्रकाशितवाक्य 19:8-9 के अनुसार, पत्नी, मसीह की दुल्हन, सहस्राब्दी के दौरान केवल जयवन्त विश्वासियों से मिलकर बनी है, जबकि 21:2 में दुल्हन, पत्नी, सहस्राब्दी के बाद अनंत काल के लिए सभी बचाए गए संतों से बनी है।
3. दुल्हन की तैयारी जयवन्तों के जीवन में परिपक्वता पर निर्भर करती है—19:7; इब्र. 6:1; फिलि. 3:12-15; इफ. 4:13।
4. हमें नए यरूशलेम को मसीह की दुल्हन के रूप में सुशोभित और परिपूर्ण करने की आवश्यकता है, जिसमें परमेश्वर पिता सोने के रूप में, परमेश्वर पुत्र मोती के रूप में, और परमेश्वर आत्मा बहुमूल्य पत्थरों के रूप में हो—प्रक. 21:2, 19अ; 1 कुर. 3:12; श्रेष्ठ. 1:10-11।
5. जयवन्त व्यक्ति अलग-अलग व्यक्ति नहीं होते बल्कि एक सामूहिक दुल्हन होते हैं।
6. जयवन्त न केवल जीवन में परिपक्व होते हैं बल्कि एक दुल्हन के रूप में एक साथ मिलकर निर्मित होते हैं।

C. "उसे चमकदार, स्वच और महीन मलमल पहेनने को दिया गया है; यह मलमल तो संतों के धनर्मिकता के कार्य है"—प्रक. 19:8:

1. *स्वच्छ* स्वभाव को संदर्भित करता है, और *चमकदार* अभिव्यक्ति को संदर्भित करता है।
2. "धार्मिकता" के लिए अनुवादित यूनानी शब्द का अनुवाद "धर्मी कार्य" भी किया जा सकता है।
3. धार्मिकता उस धार्मिकता को संदर्भित नहीं करती है जो हमें अपने उद्धार के लिए प्राप्त हुई है—1 कुर. 1:30।
4. हमारे उद्धार के लिए हमें जो धार्मिकता प्राप्त हुई है वह वस्तूपरक है और हमें धार्मिक परमेश्वर की आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम बनाती है, जबकि प्रकाशितवाक्य 19:8 में जयवन्त होते संतों की धार्मिकता व्यक्तिपरक है (फिलि. 3:9) और उन्हें जयवन्त मसीह की आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम बनाती है।
5. इस प्रकार, महीन मलमल हमारे जयवन्त होते जीवन, हमारे जयवन्त होते जीवन को इंगित करता है; यह मसीह है जिसे हम अपने अस्तित्व से जीते हैं।

D. "धन्य हैं वे, जो मेम्ने के विवाह भोज में बुलाए गए हैं...ये परमेश्वर के सत्य वचन हैं"—प्रक. 19:9:

1. मेम्ने का विवाह भोज परिणय भोज है, एक हजार वर्ष का राज्य, जो कि परमेश्वर की दृष्टि में एक दिन है, जो जयवन्त होते विश्वासियों के लिए एक इनाम है—आ. 9; मत. 22:2, 11-14; 2 पत. 3:8।
2. मसीह के विवाह भोज में बुलाया जाना, जो जयवन्त होते विश्वासियों को सहस्राब्दी के आनंद में ले जाएगा, धन्य होना है—प्रक. 19:9।
3. प्रकाशितवाक्य 19:9 में मेम्ने का विवाह भोज मत्ती 22:2 में परिणय भोज है; यह जयवन्त होते विश्वासियों के लिए एक इनाम होगा:
   a. बुलाए जाने का अर्थ है उद्धार प्राप्त करना (रो. 1:7; 1 कुर. 1:2; इफ. 4:1), जबकि चुने जाने का अर्थ है इनाम प्राप्त करना।
   b. केवल जयवन्त लोगों को ही उनके लिए इनाम के रूप में विवाह भोज में बुलाया जाएगा; सभी बचाए गए लोग इसमें भाग नहीं लेंगे।
   c. जयवन्त होते विश्वासी, जिन्हें मेम्ने के विवाह भोज में बुलाया जाएगा, वे मेम्ने की दुल्हन भी होंगे—प्रक. 19:8-9।

संदेश दो

दुल्हन का निर्माण करना

पवित्रशास्त्र पठन: उत. 1:26; 2:7-10, 18-25; प्रक. 19:7-9; 21:9-11

I. परमेश्वर का भवन सम्पूर्ण बाइबल में केन्द्रीय विषय है; मसीह की दुल्हन त्रिएक परमेश्वर का भवन है—"और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया"—उत. 2:22:

A. सम्पूर्ण बाइबल की तुलना एक भवन नियमावली से की जा सकती है; अदन वाटिका के प्रकाशन के विषय में, जो पवित्रशास्त्र में दिव्य प्रकाशन की शुरूआत है, और नए यरूशलेम के विषय में प्रकाशन, जो पवित्रशास्त्र में दिव्य प्रकाशन की समाप्ति है, एक दूसरे को प्रतिबिंबित करती है।

B. पवित्रशास्त्र के इन दो भागों में जो प्रकट किया गया है वह परमेश्वर का केन्द्रीय विचार, दिव्य प्रकाशन की केन्द्रीय रेखा, और पवित्रशास्त्र की व्याख्या और समझ का एक नियंत्रित करने वाला सिद्धांत है:

1. उत्पत्ति 1 और 2 अपना दिव्य भवन पाने के लिए परमेश्वर के जैविक वास्तुशिल्पीय योजना की रूपरेखा है (इब्र. 11:10); परमेश्वर की चाह मसीह को हमारे आंतरिक गठन के भीतर निर्माण करना है ताकि हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व मसीह से पुन: गठित हो जाए; इस तरह से परमेश्वर अपने स्वरूप में अपने आप को अभिव्यक्त करने के लिए और अपने अधिकार के साथ अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए एक सामूहिक मनुष्य पा सकता है (उत. 1:26; 1 कुर. 3:9; मत. 16:18; 2 शम. 7:12-14अ)।
2. प्रकाशितवाक्य 21 और 22 पूर्ण भवन की तस्वीर हैं, जो त्रिएक परमेश्वर की सामूहिक अभिव्यक्ति है; नया यरूशलेम अदन वाटिका के विषय में दिव्य प्रकाशन का प्रतिबिंब और परिपूर्णता है।
3. मसीह अपनी दुल्हन से विवाह करने के लिए दूल्हे के रूप में वापस आएगा, जो जयवंतों की समग्रता होगी; जयवंतों द्वारा इस युग में यह निर्माण कार्य राज्य युग में नए यरूशलेम की प्रारम्भिक परिपूर्ति के लिए है (19:7-9) और अंतत: नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में नए यरूशलेम की पूर्ण परिपूर्ति के लिए है (21:2)।
4. सभी शताब्दियों से पवित्र आत्मा के निरंतर कार्य करने के माध्यम से, यह लक्ष्य इस युग के अंत तक हासिल कर दिया जाएगा; तब दुल्हन जयवन्त होते विश्वासी, तैयार होंगे, और परमेश्वर का राज्य आ जाएगा—मत. 26:29; 13:43।
5. सामूहिक दुल्हन, नया यरूशलेम, परमेश्वर के उद्देश्य के दो पहलुओं को पूरा करेगी (उत. 1:26); पहला, नया यरूशलेम परमेश्वर के पूर्ण स्वरूप में उसकी महिमा के लिए परमेश्वर की पूर्ण अभिव्यक्ति होगी (प्रक. 21:11; 4:3); दूसरा, यह नया यरूशलेम शत्रु को वश में करेगी, पृथ्वी को जीतेगी, और सम्पूर्ण ब्रह्मांड के ऊपर परमेश्वर के आधिपत्य के साथ उसके अधिकार का अभ्यास करेगी (उत. 1:26; प्रक. 22:5; प्रसं. 20:10, 14-15)।

C. जब हम परमेश्वर के लोगों के रूप में परमेश्वर के साथ प्रेम संबंध में प्रवेश करते हैं, तो हम उसका जीवन प्राप्त करते हैं, जिस प्रकार हव्वा ने आदम का जीवन प्राप्त किया; यह यही जीवन है कि जो हमें परमेश्वर के साथ एक बनने के लिए सक्षम करता है और उसे हमारे साथ एक बनाता है—उत. 2:21-22।

II. परमेश्वर और उसके लोगों का एक होने के लिए, उनके बीच में एक पारस्परिक प्रेम होना जरूरी है; बाइबल में प्रकट परमेश्वर और उसके लोगों के बीच का प्रेम मुख्य रूप से एक पुरुष और एक स्त्री के बीच के स्नेहमय प्रेम के समान है—यूह. 14:21, 23; यिर्म. 2:2; 31:3:

A. जैसे परमेश्वर के लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसके साथ उसके वचन में संगति के लिए समय व्यतीत करते हैं, तो परमेश्वर उन्हें अपने दिव्य तत्व से भरता है, उन्हें अपने जीवनसाथी के रूप में अपने साथ एक बनाता है, ठीक वैसे ही जैसे वह जीवन, स्वभाव, और अभिव्यक्ति में है—भज. 119:140, 15-16।

B. परमेश्वर ने पहले हमसे प्रेम किया जिसमें उसने हमें अपने प्रेम से भरा और हमारे भीतर वो प्रेम उत्पन्न किया जिससे हम उसे और भाइयों को प्रेम करते हैं—1 यूह. 4:19-21।

C. वह जीवन जिसे हमने परमेश्वर की ओर से ग्रहण किया है एक प्रेम का जीवन है; मसीह ने इस संसार में प्रेम के रूप में परमेश्वर का जीवन जिया, और वह अब हमारा जीवन है ताकि हम इस संसार में प्रेम का वही जीवन जी सकें और ठीक वैसे ही हो सकें जैसा वह है—3:14; 5:1; 2:5-6; 4:17।

D. हमारा स्वाभाविक प्रेम क्रूस पर रखा जाना जरूरी है; परमेश्वर के प्रेम और हमारे स्वाभाविक प्रेम में एक अंतर यह है कि हमारे स्वाभाविक प्रेम को ठेस पहुंचाना बहुत आसान है।

E. हमें ऐसे व्यक्ति होना चाहिए जो मसीह के प्रेम से पूरी तरह भर जाएँ और उसके द्वारा बहा ले जाएँ; दिव्य प्रेम हमारी ओर बड़े जल के तेजी से बहते हुए ज्वार की तरह होना चाहिए, जो हमें अपने नियंत्रण से बाहर होकर उसके लिए जीने के लिए प्रेरित करे—2 कुर. 5:14

F. भाईचारे के प्रेम के संबंध में आज्ञा पुरानी और नई दोनों है: पुरानी: क्योंकि विश्वासियों के पास यह उनके मसीही जीवन की शुरूआत से रही है; नई, क्योंकि उनकी मसीही चाल में यह नई ज्योति के साथ शुरू होता है और बार-बार नई प्रबुद्धता और ताजी शक्ति के साथ चमकता है—1 यूह. 2:7-8; 3:11, 23; यूह. 13:34।

G. देह मसीह की दुल्हन बनने के लिए अपने आपको प्रेम में निर्मित करती है (इफ. 4:16); हमारी परमेश्वर-प्रदत्त पुनरुज्जीवित आत्मा प्रेम की एक आत्मा है; हमें आज की कलीसिया की दुर्गति पर विजय पाने के लिए एक ज्वलंत आत्मा की जरूरत है (2 तीम. 1:7)।

H. "ज्ञान घमंड उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति होती है" (1 कुर. 8:1ब; 2 कुर. 3:6); एक दूसरे से प्रेम करना एक चिह्न है कि हम मसीह के हैं (यूह. 13:34-35); कलीसिया में प्रेम करना प्रथम बनाम सभी भाइयों को प्रेम करना है (3 यूह. 9)।

I. जिस प्रकार प्रभु यीशु ने अपने प्राण जीवन को दे दिया ताकि हमारे पास दिव्य जीवन हो सके, हमें अपने प्राण जीवन को खोने और भाइयों को प्रेम करने के लिए स्वयं को इनकार करने की जरूरत है और मसीह की दुल्हन की तैयारी के लिए देह जीवन के अभ्यास में उनको जीवन की सेवकाई करने की जरूरत है—1 यूह. 3:16; 4:17 और पादटिप्पणी 5; यूह. 10:11, 17-18; 15;13; इफ. 4;29 —5:2; 2 कुर. 12:15; रो. 12;9-13।

J. प्रेम हमारे लिए मसीह की जैविक देह के रूप में कलीसिया के निर्माण के लिए कुछ भी होने और कुछ भी करने के लिए सबसे उत्तम मार्ग है—1 कुर. 12:31ब—13:8ब।

III. हमें वो देखने की जरूरत है जो परमेश्वर ने किया जिससे कि अपने आपके लिए एक अर्धांगिनी उत्पन्न कर सकें; उत्पत्ति 2 आदम और हव्वा के प्ररूप में मसीह और उसकी दुल्हन की एक तस्वीर प्रकट करता है:

A. आदम मसीह में वास्तविक, सार्वभौमिक पति के रूप में परमेश्वर को प्ररूपित करता है, जो अपने आपके लिए एक पत्नी खोज रहा है—रो. 5:14; प्रसं. यूह. 3:29; 2 कुर. 11:2; इफ. 5:31-32; प्रक. 19:7-9; 21:9-21।

B. "फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊंगा जो उससे मेल खाए"—उत. 2:18:

1. आदम के लिए एक पत्नी जरूरत अपने गृहप्रबंध में अपने अर्धांगिनी, अपनी पूरक (अक्षरस. उसकी समरूप) के रूप में एक पत्नी पाने के लिए परमेश्वर की जरूरत को प्ररूपित और चित्रित करती है; यधपि परमेश्वर, मसीह, पूर्ण रूप से और अनंत रूप से सिद्ध है, वह अपनी पत्नी के रूप में कलीसिया के बिना पूरा नहीं है।
2. परमेश्वर दोनों को पाने की चाह रखता है, आदम, जो मसीह को सूचित करता है, और हव्वा, जो कलीसिया को सूचित करती है; उसका उद्देश्य "उनको आधिपत्य करने देना" है (1:26); यह एक विजयी मसीह प्लस एक विजयी कलीसिया पाना है, एक मसीह जिसने दुष्ट के कार्य पर जीत पाई है प्लस एक कलीसिया जिसने दुष्ट के कार्य को पलट दिया है; परमेश्वर चाहता है कि मसीह और कलीसिया आधिपत्य करें (रो. 5:17; 16:20; इफ. 1:22-23)।

C. भूमि से परमेश्वर ने खेत के प्रत्येक जन्तु और आकाश के प्रत्येक पक्षी को बनाया और उन्हें आदम के पास लाया, "और आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उससे मेल खा सके"—उत. 2:19-20।

D. पत्नी को ठीक वैसे ही होना जरूरी है जैसा की जीवन, स्वभाव, और अभिव्यक्ति में पति होता है; पशुओं, पक्षियों, जानवरों में आदम को अपने लिए एक भी पूरक नहीं मिला, वह जो उससे मेल कहा सकता था—आ. 23।

E. अपने आपके लिए एक पूरक उत्पन्न करने के लिए, परमेश्वर पहले एक मनुष्य बना, जैसा कि परमेश्वर का आदम की सृष्टि करने के द्वारा प्ररूपित किया गया है—यूह. 1:14; रो. 5:14।

F. "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को गहरी नींद में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकाल कर उसकी जगह मांस भर दिया।"—उत. 2:21:

1. अपनी पत्नी के रूप में हव्वा को उत्पन्न करने के लिए आदम की गहरी नींद अपनी अर्धांगिनी के रूप में कलीसिया को उत्पन्न करने के लिए क्रूस पर मसीह की मृत्यु को प्ररूपित करती है—इफ. 5:25-27।
2. बाइबल में, नींद का मतलब मृत्यु होता है—1 कुर. 15:18; 1 थिस. 4:13-16; यूह. 11:11-14।
3. मसीह की मृत्यु जीवन-मुक्त करने वाली, जीवन-प्रदानक, जीवन-प्रचारक, जीवन-गुणक, और जीवन-उत्पन्न करने वाली मृत्यु है, जिसे उस गेंहूँ के दाने के द्वारा प्ररूपित किया गया है जो मरने और उगने के लिए भूमि पर गिरा जिससे कि कई दाने उत्पन्न कर सके (12:24) रोटी बनाने के लिए जो देह, कलीसिया है (1 कुर. 10:17)।
4. मसीह की मृत्यु के माध्यम से उसके भीतर का दिव्य जीवन मुक्त किया गया, और उसके पुनरूत्थान के माध्यम से उसका मुक्त किया गया दिव्य जीवन कलीसिया को गठित करने के लिए उसके विश्वासियों के भीतर प्रदान किया गया—लूक. 12:49-50; रो. 12:11; प्रक. 4:5।
5. एक ऐसी प्रक्रिया के माध्यम से मसीह में परमेश्वर मनुष्य के भीतर परमेश्वर के जीवन और स्वभाव के साथ गढ़ा गया ताकि मनुष्य ठीक वैसा हो सके जैसा कि जीवन और स्वभाव में परमेश्वर है जिससे कि उसकी अर्धांगिनी के रूप में उससे मेल खा सके।

G. "और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया"—उत. 2:22:
1. आदम की खुली बगल से ली गई पसली मसीह के अटूट, अविनाशी अनंत जीवन को प्ररूपित करती है (इब्र. 7:16; यूह. 19:32-33, 36; निर्ग. 12:46; भज. 34:20), जो उसकी बेधी हुई बगल से बहा (यूह. 19:34) अपनी अर्धांगिनी के रूप में कलीसिया को उत्पन्न करने और निर्माण करने के लिए अपने विश्वासियों को जीवन प्रदान करने के लिए:
   a. मसीह की बगल से लहू और पानी बहा, परन्तु सब जो आदम की बगल से बाहर आया वो बिना लहू के पसली थी।
   b. यह इसलिए क्योंकि आदम के समय पर लहू के माध्यम से छुटकारे की कोई जरूरत नहीं थी, क्योंकि वहाँ कोई पाप नहीं था; जिस समय तक मसीह क्रूस पर "सो रहा" था, तो वहाँ पाप की समस्या थी; इस प्रकार, जो लहू मसीह की बगल से निकला वो हमारे न्यायिक छुटकारे के लिए था।
   c. लहू के बाद, पानी बाहर आया, जो हमारे जैविक उद्धार के लिए परमेश्वर का बहता हुआ जीवन है (निर्ग. 17:6; 1 कुर. 10:4; गिन. 20:8); यह दिव्य, बहता हुआ, अनसृजा जीवन आदम की बगल से ली गई पसली के द्वारा प्ररूपित किया गया है (रो. 5:10)।
2. उत्पत्ति 2:22 यह नहीं कहता है कि हव्वा को सृजा गया बल्कि उसे निर्मित किया गया; आदम की बगल से ली गई पसली से हव्वा का निर्माण क्रूस पर मसीह की मृत्यु के माध्यम से उसकी ओर से मुक्त किए गए पुनरूत्थित जीवन के साथ कलीसिया का निर्माण करने को प्ररूपित करता है जिसे उसके विश्वासियों के भीतर उसके पुनरूत्थान में प्रदान किया गया—यूह. 12:24; 1 पत. 1:3।
3. वास्तविक हव्वा के रूप में कलीसिया मसीह के सभी विश्वासियों में उसकी समग्रता है; कलीसिया मसीह का पुनरूत्पादन है; मसीह के तत्व के अलावा, कलीसिया में कोई अन्य तत्व नहीं चाहिए—उत. 5:2।

H. केवल वही जो मसीह से उसके पुनरूत्थान जीवन से आता है उसकी दुल्हन के रूप में उसका पूरक हो सकता है (1 कुर. 12:12; इफ. 2:6; 5:28-30); कलीसिया मसीह से निकला शुद्ध उत्पाद है; कलीसिया "मसीहमय," "पुनरूत्थाननीय," और स्वर्गीय है।

I. आदम और हव्वा, जो एक हैं, ने पति और पत्नी के रूप में एकसाथ एक वैवाहिक जीवन जिया (उत. 2:24-25); यह चित्रित करता है कि नए यरूशलेम में प्रक्रियाकृत और परिपूर्ण त्रिएक परमेश्वर सार्वभौमिक पति के रूप में छुड़ाए गए, पुनरूजीवित किए गए, रूपांतरित और महिमान्वित मानवता के साथ पत्नी के रूप में सदैव एक वैवाहिक जीवन जिएगा (प्रक. 22:17अ)।

J. अनंतता, जो बिना अंत का है उसमें दिव्य, अनंत, और अत्यधिक महिमामय जीवन के द्वारा, वे एक ऐसा जीवन जीयेंगे जो एक आत्मा के रूप में परमेश्वर और मनुष्य का मिश्रित होना है, एक ऐसा जीवन जो सर्वोत्तम है और जो आशीषों और आनंद से उमड़ता है।

संदेश 3

दुल्हन की परिपक्वता

पवित्रशास्त्र पठन: प्रक. 19:6-9; यूह. 3:29; याक. 5:7;
मत. 5:48; कुल. 1:28-29; 3:10-11

I. यूनानी में *परिपक्व* शब्द का अर्थ है "अंतिम बिंदु पर":

A. रूपांतरित होना हमारे स्वाभाविक जीवन में चयापचय रूप से परिवर्तित होना है; परिपक्व होना उस दिव्य जीवन से भरा होना है जो हमें बदलता है—इब्र. 6:1; कुल. 4:12; रो. 12:2; 2 पत. 1:3।

B. रुपान्तरण का अंतिम चरण परिपक्वता, जीवन की परिपूर्णता है—आ. 4।

C. परिपक्व विश्वासी मसीह की देह को जानता है और उसकी परवाह करता है, देह-सचेत और देह-केंद्रित होता है—1 कुर. 12:16, 18-19, 21, 24।

II. जैसा कि नए नियम में उपयोग किया गया है, परिपक्व शब्द का तात्पर्य विश्वासियों के मसीह के जीवन में पूर्ण-विकसित और सिद्ध होने से है, जिसे उन्होंने पुनरुज्जीवन के समय प्राप्त किया था। —तीत. 3:5; 1 पत. 1:3, 23; मत. 5:48:

A. हमें अपने आप से कभी भी संतुष्ट नहीं होना चाहिए बल्कि मसीह के जीवन में वृद्धि और परिपक्वता का पीछा करना चाहिए—फिलि. 3:12, 14।

B. हमें उन बातों को भूलने के द्वारा, जो पीछे रह गई हैं, और उन बातों की ओर बढ़ने के द्वारा, जो आगे हैं, परिपक्वता की ओर बढ़ने, परिपक्वता पर लाए जाने की जरूरत है, और सहस्राब्दी राज्य में मसीह के पूर्णतम आनन्द के लिए मसीह के पूर्ण आनन्द और प्राप्ति के लिए अनुसरण करना है—आआ. 12-15।

C. आत्मिक जीवन में परिपक्वता की पूर्व मांग दिव्य जीवन में निरंतर बढ़ते रहना है—इफ. 4:15।

D. मसीह के जीवन में विश्वासियों की वृद्धि और परिपक्वता का अंतिम परिणाम पूर्ण-विकसित मनुष्य है—मसीह की देह के रूप में कलीसिया एक परिपक्व मनुष्य में वृद्धि कर रही है—आ. 13।

III. अपनी पत्री में, याकूब एक किसान का उदाहरण देता है जो धीरज के साथ भूमि की बहुमूल्य उपज की प्रतीक्षा कर रहा है—5:7:

A. प्रभु यीशु वास्तव में असली किसान, अद्वितीय किसान है—मत. 13:3।

B. जब हम धीरज के साथ प्रभु के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, वह, असली किसान के रूप में, धैर्य के साथ जीवन में हमारी परिपक्वता की प्रतीक्षा कर रहा है, जो उसके खेत के पहले फल और फसल के रूप में हैं—प्रक. 14:4, 14-15।

C. यदि हम प्रार्थना करते हैं, "प्रभु, जल्दी वापस आ," तो हो सकता है प्रभु कहे, "जबकि तुम मेरे वापस आने की प्रतीक्षा कर रहे हो, मैं तुम्हारी परिपक्वता की प्रतीक्षा कर रहा हूँ; केवल तुम्हारी परिपक्वता ही मेरे आगमन को शीघ्र कर सकती है।"

D. यह एहसास करना हमारे लिए बहुत मददगार है कि यदि हम प्रभु के वापस आने की प्रतीक्षा करने के बारे में गंभीर हैं, तो हमें जीवन में परिपक्वता तक बढ़ने की आवश्यकता है।

IV. परिपक्व होना मसीह का हमारे अंदर पूर्ण रूप से रूप ले लेना है; इसका अर्थ यह भी है कि हम पूरी तरह से उसके स्वरूप में रूपान्तरित हो गए हैं—गल. 4:19; 2 कुर. 3:18:

A. हमारे पुनरुज्जीवन के समय से, प्रभु हमारे अंदर कार्य कर रहा है ताकि हमारे पास उसका स्वरूप हो—आ. 18; रो. 8:29।

B. जब प्रभु ने अपने स्वरूप को पूरी तरह से हमारे अंदर कार्य कर लिया होगा और हमारे माध्यम से पूरी तरह से अभिव्यक्त होता है, तो हम जीवन में परिपक्व होंगे—इफ. 3:16-17।

V. श्रेष्ठगीत का अध्याय 3 हमें खोजी जन की परिपक्वता दिखाता है, और अध्याय 4 यह व्याख्या करते हुए जारी है कि ऐसी परिपक्वता तक इच्छा को वश में करने से पहुंचा जाता है; खोजी जन की परिपक्वता का राज़ यह है कि उसकी इच्छा पूरी तरह से वश में हो गई है और पुनरूत्थित हो गई है—आ. 4:

A. गर्दन परमेश्वर के अधीन मानव इच्छा को सूचित करती है; प्रभु हमारी इच्छा के समर्पण को सबसे सुंदर चीज मानता है—आआ. 1अ, 4।

B. यदि हमारे पास एक अधीन होने वाली इच्छा है, तो हमारी इच्छा दाऊद की मीनार की तरह अभिव्यक्त होती है जिसमें सभी प्रकार के हथियार हैं:

1. सबसे पहले, हमारी इच्छा को वश में किया जाना चाहिए; तब यह पुनरुत्थान में मजबूत होगी और दाऊद की मीनार की तरह, आत्मिक युद्ध के लिए शस्त्रागार होगी—इफ. 6:10।
2. आत्मिक युद्ध के हथियार हमारे वश में और पुनरुत्थित इच्छा में रखे जाते हैं—2 कुर. 10:3-5।

VI. पौलुस की सेवकाई का लक्ष्य प्रत्येक मनुष्य को एक नए मनुष्य के लिए मसीह में परिपक्व, पूर्ण विकसित प्रस्तुत करना था—कुल. 1:28-29; 3:10-11:

A. कुलुस्सियों 1:28 में "पूर्ण विकसित" अनुवादित यूनानी शब्द का अनुवाद "सिद्ध," "पूर्ण," या "परिपक्व" भी किया जा सकता है।

B. पौलुस की सेवकाई दूसरों में मसीह को प्रदान करने की थी ताकि वे मसीह में पूर्ण-विकास करने तक परिपक्व होने के द्वारा सिद्ध और संपूर्ण हो जाएँ।

VII. उत्पत्ति 37—47 याकूब की परिपक्वता की प्रक्रिया का एक अभिलेख है:

A. उत्पत्ति 27 में हम एक प्रतिस्थापनकर्ता को; अध्याय 37 में, एक रूपांतरित व्यक्ति को; और अध्याय 47 के अंत में, एक परिपक्व व्यक्ति को देखते हैं।

B. रूपांतरण का अंतिम चरण परिपक्वता, जीवन की परिपूर्णता है:

1. परमेश्वर का अनन्त उद्देश्य केवल हमारे रुपान्तरण और परिपक्वता के माध्यम से पूरा हो सकता है—1:26; कुल. 1:28; 2:19।
2. परिपक्वता हमारे अन्दर दिव्य जीवन को तब तक बार-बार प्रदान करने का विषय है जब तक कि हमारे पास जीवन की परिपूर्णता न हो जाए—यूह. 10:10।

C. परिपक्वता क्षमता के विस्तार की बात है—भज. 4:1:

1. जीवन में परिपक्वता पवित्र आत्मा के अनुशासन को प्राप्त करने का योग है—इब्र. 12:5-11।
2. दूसरे लोग ऐसे हो सकता है ऐसे व्यक्ति को देखें जो जीवन में परिपक्व हो गया है, लेकिन वे पवित्र आत्मा के संचित अनुशासन को नहीं देख सकते हैं जिसे उस व्यक्ति ने वर्षों से दिन-प्रतिदिन गुप्त रूप से प्राप्त किया है—2 कुर. 1:8-10; उत. 47:7, 10।

D. परमेश्वर संप्रभुतापूर्वक व्यक्तियों, चीजों और घटनाओं का उपयोग हमें उन सभी चीजों से खाली करने के लिए जिन्होंने हमें भर दिया हैं और हर व्यस्तता को दूर करने के लिए करेगा ताकि हमारे पास परमेश्वर से भरे जाने की बढ़ी हुई क्षमता हो—लूक. 1:53; मत. 5:6।

E. याकूब का जीवन प्रकट करता है कि हमारे साथ जो कुछ भी होता है वह हमारे रूपांतरण और परिपक्वता के लिए परमेश्वर की संप्रभुता के अधीन है, कुछ भी आकस्मिक नहीं है:

1. परिपक्व होने के लिए, याकूब को सबसे पहले यूसुफ को खोना पड़ा, जो उसके हृदय का खजाना था—उत. 37:31-35।
2. एक परिपक्व विश्वासी ने सीखा है कि परमेश्वर हर तरह की परिस्थिति में उसकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए दयालु और सर्व-पर्याप्त है—43:11, 13-14; 17:1; फिलि. 1:19-21अ; 4:11-12; प्रसं. 1 तीम. 6:6-8।
3. उसका भरोसा और विश्राम पूरी तरह से उसके सर्व-पर्याप्त परमेश्वर की दया पर है, अब खुद में या अपनी योग्यता में नहीं रहा—रो. 9:16।
4. याकूब की परिपक्वता का सबसे मजबूत संकेत उसका दूसरों को आशीष देना था—उत. 47:7, 10; 48:14-16; इब्र. 7:7।

VIII. परिपक्व दुल्हन परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य का लक्ष्य है—प्रक. 19:7-9:

A. सामूहिक दुल्हन की तैयारी जयवंतों के जीवन में परिपक्वता पर निर्भर करती है—आ. 7; इब्र. 6:1; फिलि. 3:12-15; इफ. 4:13।

B. मेमने का विवाह परमेश्वर के नए नियम के गृहप्रबंध की पूर्णता का परिणाम है, जो अपने दिव्य जीवन में अपने न्यायिक छुटकारे और अपने जैविक उद्धार के माध्यम से मसीह के लिए एक दुल्हन, कलीसिया हासिल करना है—उत. 2:22; रो. 5:10; प्रक. 19:7-9; 21:2।

C. यूहन्ना के सुसमाचार में, मसीह को मेमने के रूप में जो पाप को उठा ले जाने के लिए आया और दूल्हे के रूप में जो दुल्हन को पाने के लिए आया दोनों के रूप में प्रकट किया गया है—3:29।

D. मसीह का लक्ष्य पाप को दूर करना नहीं है; यह दुल्हन को पाना है:

1. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, हम देखते हैं कि मसीह मेमना और आने वाला दूल्हा है; इसलिए, दूल्हे के रूप में, उसका विवाह होना चाहिए—19:7-9।
2. मेमने का विवाह एक सार्वभौमिक विवाह होगा, यह छुड़ाने वाले और छुड़ाए गए लोगों का विवाह होगा।
3. मसीह दूल्हे के रूप में आ रहा है, और हम दुल्हन के रूप में जा रहे हैं।

E. एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय दुल्हन की तैयारी है—आ. 7:

1. प्रकाशितवाक्य 19:8 और 9 के अनुसार, पत्नी, मसीह की दुल्हन, यहाँ सहस्राब्दी के दौरान केवल जयवन्त होते विश्वासियों से मिलकर बनी है।
2. दुल्हन की तैयारी जयवंतों के जीवन में परिपक्वता पर निर्भर करती है, जो अलग-अलग व्यक्ति नहीं बल्कि सामूहिक दुल्हन हैं।
3. प्रकाशितवाक्य 19:6 में बड़ी भीड़ की आवाज़ यह घोषणा करती है, "हालेलुयाह! क्योंकि हमारा प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज करता है":
   a. परमेश्वर का राज, राज्य, मेमने के विवाह से संबंधित है।
   b. विवाह प्रभु के राज, राज्य को लाएगा, क्योंकि विवाह में बुलाए गए सभी अतिथि सामूहिक दुल्हन और दूल्हे के सह-राजा दोनों होंगे; उसके सभी सह-राजा उसकी सामूहिक दुल्हन होंगे।
   c. जयवंतों के लिए, सहस्राब्दी राज्य का हज़ार वर्ष विवाह भोज होगा।
   d. विवाह भोज में आमंत्रित सभी लोग राजाओं के रूप में हज़ार वर्ष के शासन में भी सहभागी होंगे।
   e. जयवंतों के लिए, राज्य में मसीह के साथ राज करना विवाह भोज होगा—आ. 9।

सन्देश चार

दुल्हन की सुन्दरता

पवित्रशास्त्र पठन: रो. 6:19, 22; इफ. 5:25-27; प्रक. 19:7-9; 1 थिस. 5:23; श्रेष्ठ. 8:13-14

I. स्वभावगत पवित्रीकरण की प्रक्रिया मसीह की सुन्दर, पवित्र, और महिमामय दुल्हन बनने के लिए हमारे सौन्दर्यकरण के रूप में हमारे जैविक उद्धार की प्रक्रिया है—1 थिस. 4:3अ; 1 पत. 1:15-16; इफ. 1:4-5; 5:25-27; 1 थिस. 5:23-24; रो. 6:19, 22:

A. इफिसियों 5:25-27 हमें मसीह को तीन चरणों में प्रस्तुत करने में परमेश्वर के पूर्ण उद्धार की सम्पूर्णता को प्रकट करता है :

1. अतीत में, मसीह ने छुटकारा देने वाले के रूप में हमारे न्यायिक छुटकारे के लिए खुद को कलीसिया के लिए दे दिया—"हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम करो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम किया और अपने आप को उसके लिए दे दिया"—आ. 25।
2. वर्तमान में, मसीह जीवन दायक आत्मा के रूप में कलीसिया को अपने तत्व के साथ उसे संतृप्त करने के द्वारा स्वभावगत रूप से पवित्रीकृत कर रहा है ताकि वह उसकी अर्धांगिनी बन सके; यह दुल्हन के सौन्दर्यकरण और दुल्हन की तैयारी के रूप में जैविक उद्धार है—"कि उस को वचन के जल के स्नान (धोने) से शुद्ध करके पवित्र बनाए"—आ. 26।
3. भविष्य में, मसीह दूल्हा के रूप में अपनी संतुष्टी के लिए अपनी अर्धांगिनी के रूप में कलीसिया को खुद को प्रस्तुत करेगा—"और उसे एक ऐसी महिमामय कलीसिया बनाकर प्रस्तुत करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न इनके समान कुछ हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो"—यह दुल्हन की प्रतुती के लिए हमारा महिमकरण है —आ. 27।
4. अतीत में, मसीह ने कलीसिया के लिए खुद को दे दिया; वर्तमान में, वह कलीसिया को पवित्र कर रहा है; और भविष्य में, वह अपनी संतुष्टी के लिए अपनी अर्धांगिनी के रूप में कलीसिया को खुद को प्रस्तुत करेगा; इसलिए, उसका कलीसिया को प्रेम करना उसे पवित्र करने के लिए है, और उसका कलीसिया को पवित्र करना कलीसिया को अपने सामने महिमामय रुप से प्रस्तुत करने के लिए है।

B. दुल्हन की सुन्दरता उसी मसीह से आती है जो कलीसिया के भीतर गढ़ा गया है और कलीसिया के माध्यम से अभिव्यक्त होने के लिए कलीसिया से चमक रहा है—यश. 43:7; इफ. 3:21।

C. मसीह अपने शेष लोगों के लिए महिमा का मुकुट और सुन्दरता का ताज है—यश. 28:5:

1. एक मुकुट एक टोपी या पगड़ी के समान होता है, जबकि ताज (डायडेम) मुकुट के सबसे सुन्दर, महिमामय हिस्से के रूप में एक सिर का सरबंध होता है—निर्ग. 28:36-39; 29:6; यश. 62:3।
2. हमें उसकी सुन्दरता के घर के रूप में कलीसिया में निरंतर प्रभु की सुन्दरता को निहारने की जरूरत है ताकि हम सुन्दरता के अपने ताज के रूप में उसके साथ उसकी सुन्दर दुल्हन बनने के लिए महिमा से महिमा तक रूपांतरित हों, प्रभु द्वारा सुन्दर बनाए जाएँ— 2 कुर. 3:18; प्रक. 19:7-9; यश. 28:5; भज. 27:4; यश. 60:1, 7, 9, 13, 19; 62:3; प्रक. 21:11।

II. पुन:प्राप्ति में प्रभु का प्राथमिक कार्य हमें उसकी महिमामय दुल्हन बनने के लिए तैयार करने का उसका वास्तविक कार्य है; इफिसियों 5:26 में बताए गए निरंतर, स्वभावगत पवित्रीकरण के अलावा, दुल्हन को तैयार करने का कोई तरीका नहीं है और इसलिए, प्रकाशितवाक्य 19:7-9 को पूरा करने का कोई तरीका नहीं है।

A. कलीसिया जीवन-दायक आत्मा के रूप में मसीह द्वारा पवित्रीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से उसके वचन में जल से हमें साफ़ करने के द्वारा सुन्दर बनाई जाती है—इफ. 5:26-27:

1. यह सूचित करता है कि मसीह के वचन में जीवन के जल के रूप में आत्मा है; वचन जो वह हमसे बोलता है वह आत्मा और जीवन है—यूह. 6:63।
2. जीवन-दायक आत्मा के रूप में, मसीह बोलने वाली आत्मा है; जो कुछ भी वह बोलता है वह वचन है जो हमें धोता है; यह लोगोस, निरंतर वचन को संदर्भित नहीं करता, बल्कि रीमा को, जो तत्काल वचन को सूचित करता है, वचन जो प्रभु हमसे तुरंत बोलता है—मत. 4:4; यूह. 6:63; प्रक. 2:7; 22:17 अ; प्र. सं. यश. 6:9-10; मत. 13:14-15; प्रे. 28:25-31।
3. मसीह का बोलना आत्मा है; उसका बोलना जीवन-दायक आत्मा की उपस्थिति है—यूह. 6:63; इफ. 6:17।

4. अंतर्निवासी मसीह जीवन दायक आत्मा के रूप में चयापचय रूप से पुराने को धो डालने और इसे नए के साथ बदलने के लिए हमेशा तात्कालिक, तुरंत, जीवित वचन बोल रहा होता है, जो आंतरिक रूपांतरण का कारण है।

B. ऐसे एक धोने की प्रक्रिया से हम उसकी पवित्र, सुन्दर, परमेश्वर को अभिव्यक्त करने वाली दुल्हन बनने के लिए मसीह के साथ संतृप्त होते हैं और मसीह के द्वारा सुन्दर बनाए जाते हैं, एक दुल्हन जो बिना किसी कलंक या दोष के है—प्रक. 19:7; प्रसं. श्रेष्ठ. 6:13; 8:13-14।

C. मसीह जीवन-दायक आत्मा के रूप में कलीसिया को वचन में जल के धोने के अनुसार उसे साफ़ करने के द्वारा पवित्र करता है; दिव्य धारणा के अनुसार, *जल* यहां बहते जल से प्रारूपित परमेश्वर के बहते जीवन को संदर्भित करता है (निर्ग. 17:6; 1 कुर. 10:4; यूह. 7:37-39; प्रक. 7:17; 21:6; 22:1,17); हम अब धोये जाने की ऐसी प्रक्रिया में हैं ताकि कलीसिया पवित्र और निष्कलंक हो।

D. इफिसियों 5:26 में *स्नान* (*धोने*) के लिए यूनानी शब्द शाब्दिक रूप से *हौद* है; पुराने नियम में, याजक सांसारिक गन्दगी को धोने के लिए हौद का इस्तेमाल किया करते थे (निर्ग. 30:18-21); दिन प्रतिदिन, सुबह और शाम, हमें बाइबल के पास आने की और वचन में जल के हौद से धोए जाने की जरूरत है।

E. पौलुस यूनानी शब्द *रीमा* का इस्तेमाल करता है जब वह वचन के इसके धोने की प्रक्रिया की बात करता है (इफ. 5:26); लोगोस बाइबल में वस्तुपरक रूप से दर्ज परमेश्वर का वचन है; रीमा किसी ख़ास अवसर पर हमसे कहा गया परमेश्वर का वचन है (मर. 14:72; लूक. 1:35-38; 5:5; 24:1-8)।

F. रीमा हमसे कुछ व्यक्तिगत और प्रत्यक्ष रुप से प्रकट करती है; यह हमें दिखाती है जिससे हमें निपटने की जरूरत है और जिससे साफ़ किए जाने की जरूरत है (काँसे का हौद एक आईना था जो प्रतिबिंबित और बेनकाब कर सकता था—निर्ग. 38:8); हम में से हर एक के लिए महत्वपूर्ण बात यह है कि—क्या परमेश्वर आज हमसे अपने वचन को बोल रहा है?

G. एक चीज़ जिसे हम हमेशा अनमोल समझते हैं वह यह है कि प्रभु आज भी हमसे व्यक्तिगत और सीधे तौर से बात करता है; जीवन में सच्ची वृद्धि हमारा परमेश्वर से प्रत्यक्ष वचन को प्राप्त करने पर निर्भर करता है; हमारे भीतर उसके बोलने का ही सच्चा आत्मिक महत्त्व है—इब्र. 3:7-11,15; 4:7; भज. 95:7-8।

I. एक बहुत ही व्यावहारिक अर्थ में, प्रभु की उपस्थिति उसके बोलने के साथ एक है; जबकभी वह बोलता है, तो हम अपने भीतर उसकी उपस्थिति को महसूस करते हैं; मसीह का बोलना जीवन-दायक आत्मा की उपस्थिति है।

J. अंतर्निवासी आत्मा का जीवन दायक आत्मा के रूप में हमारे भीतर बोलना धोनेवाला जल है जो हमारे स्वभाव और प्रवृत्ति में पुराने तत्व को बदलने के लिए हममे नए तत्व को जमा करता है; यह चयापचय सफाई जीवन में एक सच्चा और आन्तरिक बदलाव का कारण है, जो स्वभावगत पवित्रीकरण और रूपांतरण की वास्तविकता है।

K. हमे अपनी आत्मा में बोलने वाली आत्मा, जीवन-दायक आत्मा के रूप में मसीह द्वारा सुन्दर बनना चाहिए, हमारे भीतर जीवन दायक आत्मा के रूप में प्रभु के बोलने के माध्यम से, हम उसकी महिमामय कलीसिया बनते जाते हैं— इफ. 5:26-27; प्रक. 2:7।

III. इफिसियों 5:27 प्रकट करता है कि मसीह की दुल्हन के रूप में कलीसिया अंत में महिमामय कलीसिया, परमेश्वर को अभिव्यक्त करती एक कलीसिया बन जाती है, "जिसमें न कलंक, न झुर्री, न इनके सामान कुछ है, वरन वह पवित्र और निर्दोष है":

A. हमारी एकमात्र सुन्दरता मसीह का हमारे भीतर से चमकना है; मसीह जिसकी हमारे अंदर सराहना करता है वह उसकी खुद की अभिव्यक्ति है—भज. 50:2; 2 कुर. 3:15-18; प्र. सं. निर्ग. 28:2:

1. "तेरी आँखें राजा की शोभा को निहारेंगी" (यश. 33:17अ); "राजा तेरी सुन्दरता की चाह करेगा" (भज. 45:11अ)।
2. "मेरी प्रियतमा, तू तिरसा के समान सुन्दरी है/ यरूशलेम के समान मनोहर और पताका फहराती हुई सेना के समान आक्रामक है"— श्रेष्ठ. 6:4।

B. दुल्हन के तैयार हो जाने का अर्थ है कि वह "चमकदार, स्वच्छ और महीन मलमल" पहने हुई है, जोकि "संतों की धार्मिकता है" (प्रक. 19:8); यह महीन मलमल दुल्हन की सुन्दरता है।

C. अपने विवाह के दिन पर, एक दूल्हा अपनी दुल्हन की क़ाबलियत से अधिक उसकी सुन्दरता की परवाह करता है; प्रभु यीशु, हमारा परमेश्वर, मुख्य रूप से हमारी मानवता के माध्यम से अभिव्यक्त की गई अपनी सुंदरता की परवाह करता है; हमें दिन-ब-दिन मसीह द्वारा सुन्दर बनाए जाने की जरूरत है ताकि हम उसकी सुंदर दुल्हन के रूप में उसको प्रस्तुत करने के लिए तैयार हो सकें।

D. जब भी हम प्रार्थना-पठन द्वारा उसके वचन में प्रभु की सुंदरता को निहारने और उसके वचन पर मनन करने के लिए समय बिताते हैं (इफ. 6:17-18; भज. 119:15), तो वह हमारी सुंदरता बन जाता है, और हम उसके द्वारा उसकी सुन्दरता का घर बनने के लिए सुन्दर बनाए जाते हैं ताकि वह भी सुन्दर बन सके (भज. 27:4; 2 कुर. 3:18; यश. 60:7ब, 9ब, 13ब, 19ब, 21ब)।

E. इफिसियों 5:27 में वचन के जल में धोया जाना मुख्य तौर पर दाग़ और झुर्रियों से निपटता है; दाग़ यहां स्वाभाविक जीवन का कुछ को संदर्भित करता है, और झुर्रियाँ हमारे पुरानेपन से जुड़ा है; केवल जीवन का जल जीवन के रूपांतरण द्वारा ऐसी कमियों को चयपचय रूप से धो सकता है।

F. पवित्र होने का अर्थ है मसीह के साथ संतृप्त होना और मसीह के द्वारा रूपांतरित होना, और बिना कलंक के होना बेदाग़ होना और बिना झुर्रियों के होना है, हमारे पुराने मनुष्यत्व के स्वाभाविक जीवन का कुछ नहीं होना है—प्रसं. श्रेष्ठ. 4:7।

G. इसके आलावा, कलीसिया के पास "न इनके सामान कुछ" नहीं होगा, जिसका अर्थ है कि उसके पास "इस या उस किस्म की कमियाँ" नहीं होंगी; परमेश्वर कलीसिया को उस स्थान पर लायेगा जहाँ उसके खिलाफ किसी मामले में कुछ कहा नहीं जा सका जाएगा— इफ. 5:27।

IV. इफिसियों 5:26-27 श्रेष्ठगीत 8:13-14 से मेल खाता है; दोनों प्रकट करते हैं कि यह प्रभु का हमसे बोलना है कि हम उसके दूसरे आगमन की चाह के साथ उसकी महिमामय दुल्हन बनने के लिए तैयार होते हैं — "तू जो बाग़ में बैठती है, मेरे मित्र तेरी आवाज़ सुनने को कान लगाए हुए हैं-मुझे भी सुनने दे! मेरे प्रियतम, सुगंध द्रव्यों के पर्वत पर जवान मृग के समान शीघ्रता कर":

A. श्रेष्ठगीत में मसीह की प्रेमी खोजी उससे कहती है जो अपने बाग़ के रूप में विश्वासियों में रहता है कि उसे उसकी आवाज़ सुनने दे जब उसके मित्र उसकी आवाज़ सुनने के लिए कान लगाएं हुएं हैं— 8:13; प्र. सं. 4:13-16; 5:1; 6:2:

1. यह इशारा करता है कि उस कार्य में जिसे हम, मसीह के प्रेमी होने के नाते, अपने प्रिय के रूप में उसके लिए करते हैं, हमें उसके साथ अपनी संगति बनाए रखने की, हमेशा उसे सुनने की जरूरत है (लूक. 10:38-42)।
2. हमारा जीवन प्रभु के वचनों पर निर्भर करता है, और हमारा कार्य उसकी आज्ञाओं पर निर्भर करता है (प्रक. 2:7; 1 शम. 3:9-10; प्र. सं. यश 50:4-5; निर्ग. 21:6); प्रभु के वचन के बिना हमारे पास हमारे राजा (यश. 6:1, 5), हमारे प्रभु (2 कुर. 5:14-15), हमारे सिर (कुल. 2:19) और हमारे पति (2 कुर. 11:2) के रूप में मसीह का कोई प्रकाशन, ज्योति या व्यक्तिगत ज्ञान नहीं होगा; विश्वासियों का जीवन पूरी तरह से प्रभु के बोलने पर निर्भर करता है (इफ. 5:26-27)।

B. इस काव्य पुस्तक, श्रेष्ठगीत के समापन की प्रार्थना के रूप में, मसीह की प्रेमिका प्रार्थना करती है कि उसका प्रेमी अपने मधुर और सुन्दर राज्य को (सुगंध द्रव्यों के पर्वत) स्थापित करने के लिए अपने पुनरूत्थान की सामर्थ में (जवान मृग के समान) वापस आने की शीघ्रता करे, जो पूरी पृथ्वी को भर देगा—8:14; प्रक. 11:15; दान. 2:35:

1. ऐसे प्रार्थना दूल्हा के रूप में मसीह और दुल्हन के रूप में उसकी प्रेमिका के बीच उनके वैवाहिक प्रेम में मिलन और को चित्रित करती है, जिस प्रकार से कि मसीह का एक प्रेमी, युहन्ना का प्रार्थना, पवित्र शास्त्र के समापन के शब्द के रूप में, उसके दिव्य प्रेम में मसीह और कलीसिया के बारे में परमेश्वर के अनंत गृह प्रबंध को प्रकट करता है— प्रक. 22:20।
2. "आ, प्रभु यीशु!" बाइबल में अंतिम प्रार्थना है (आ. 20); सम्पूर्ण बाइबल एक प्रार्थना के रूप में व्यक्त प्रभु के आने की चाहत के साथ समाप्त होती है।

संदेश पाँच

दुल्हन की धार्मिकता

पवित्रशास्त्र पठन: प्रक. 19:7-9; मत. 5:20; 6:33; 22:2; 2 कुर. 5:21; 1 यूह. 1:7, 9; प्रक. 15:3

I. परमेश्वर की धार्मिकता वह है जो परमेश्वर न्याय और धार्मिकता के संबंध में अपने क्रिया में है—प्रक. 15:3; रो. 1:16ब-17अ; यूह. 3:16; 1 यूह. 1:9:

A. मसीह का हमारा अनुभव परमेश्वर की धार्मिकता की नींव पर टिका है।

B. नींव परमेश्वर की धार्मिकता है, जो परमेश्वर के सिंहासन की अडिग नींव है—भज. 89:14।

II. धार्मिकता की परिभाषा के चार पहलू हैं:

A. धार्मिकता का अर्थ है परमेश्वर के सामने व्यक्तियों, वस्तुओं और मामलों के साथ उसकी धर्मी और सख्त आवश्यकताओं के अनुसार सही होना—मत. 5:20।

B. धार्मिकता मसीह की बाहरी अभिव्यक्ति है जो आत्मा के रूप में हमारे अंदर रहता है—2 कुर. 3:8-9:

1. यह परमेश्वर के स्वरूप के रूप में धार्मिकता है—इफ. 4:24; कुल. 3:10।
2. धार्मिकता की सेवकाई प्रभु के स्वरूप की सेवकाई है—2 कुर. 3:9।

C. धार्मिकता परमेश्वर के राज्य का मामला है—मत. 6:33; भज. 89:14:

1. परमेश्वर का राज्य धार्मिकता है।
2. धार्मिकता परमेश्वर की सरकार, प्रशासन और शासन से संबंधित है।

D. धार्मिकता हमारे अस्तित्व में परमेश्वर के साथ सही होने का मामला है—2 कुर. 5:21:

1. हमारे अस्तित्व में परमेश्वर के साथ सही होने का अर्थ है एक ऐसा आंतरिक अस्तित्व होना जो पारदर्शी और क्रिस्टल स्पष्ट हो, एक ऐसा आंतरिक अस्तित्व जो परमेश्वर के मन और इच्छा में हो।
2. यह मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता होने का मामला है—आ. 21।

III. धार्मिकता परमेश्वर के बाहरी कर्मों, तरीकों, कार्यों और गतिविधियों से संबंधित है—प्रक. 15:3:

A. परमेश्वर जो कुछ भी करता है वह धार्मिक है—रो. 1:16-17।

B. परमेश्वर अपने न्याय और धार्मिकता में जो कुछ भी है, वह उसकी धार्मिकता है।

IV. परमेश्वर अपने पुत्र यीशु के लहू में धर्मी है—1 यूह. 1:7, 9:

A. परमेश्वर अपने वचन में विश्वासयोग्य है (आ. 10) और अपने पुत्र यीशु के लहू में धर्मी है।

B. उसका वचन उसके सुसमाचार के सत्य का वचन है (इफ. 1:13), जो हमें बताता है कि वह मसीह के कारण हमारे पापों को क्षमा करेगा (प्रे. 10:43); मसीह के लहू ने उसकी धर्मी माँगों को पूरा किया है कि वह हमारे पापों को क्षमा करे (मत. 26:28)।

C. हमें क्षमा करना हमें हमारे पापों के अपराध से मुक्त करना है, जबकि हमें शुद्ध करना हमें हमारे अधर्म के दाग से धोना है।

V. धार्मिकता परमेश्वर के राज्य से संबंधित है—रो. 14:17:

A. कलीसिया जीवन परमेश्वर का राज्य है, और परमेश्वर का राज्य धार्मिकता है।

B. परमेश्वर का सिंहासन धार्मिकता की नींव पर स्थापित है—भज. 89:14।

C. जहाँ परमेश्वर की धार्मिकता है, वहाँ उसका राज्य भी है—यश. 32:1; इब्र. 1:8-9।

D. पुराने नियम में, धार्मिकता अक्सर राज्य का पर्यायवाची है।

E. जहाँ धार्मिकता है, वहाँ सब कुछ उचित तरीके से आगे बढ़ता है; यही राज्य है।

F. धार्मिकता पहले परमेश्वर के स्वरूप में परिणत होती है, और फिर धार्मिकता परमेश्वर के राज्य की स्थापना करती है:

1. रोमियों 8 में हमारे पास धार्मिकता और परमेश्वर का स्वरूप है।
2. रोमियों 14 में हमारे पास धार्मिकता और परमेश्वर का राज्य है।
3. स्वरूप और राज्य दोनों धार्मिकता पर आधारित हैं।

G. यह कहना कि धार्मिकता नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में निवास करेगी (2 पत. 3:13) इसका अर्थ है कि सब कुछ व्यवस्थित, सिरोमणित और विनियमित होगा:

1. सब कुछ शासित, नियंत्रित और उचित नियम के अधीन होगा, क्योंकि परमेश्वर का सिंहासन, राज्य, दिव्य प्रशासन, वहाँ होगा।
2. परिणाम शांति और आनंद होगा।

VI. प्रकाशितवाक्य 19:7-8 में हम दुल्हन की धार्मिकता देखते हैं:

A. मसीह के विश्वासियों के लिए धार्मिकता होने के दो पहलू हैं:

1. पहला पहलू विश्वासियों की धार्मिकता होना है ताकि वे परमेश्वर के सामने उनके मन फिराने और मसीह में विश्वास करने के समय वस्तूपरक रूप से धर्मी ठहरें—रो. 3:24-26; प्रे. 13:39; गल. 1:1-2 3:24ब, 27।
2. दूसरा पहलू यह है कि विश्वासियों की धार्मिकता उनके द्वारा परमेश्वर की अभिव्यक्ति के रूप में जी जाए, जो मसीह में विश्वासियों को दी गई धार्मिकता है ताकि वे परमेश्वर द्वारा व्यक्तिपरक रूप से धर्मी ठहराए जाएँ—रो. 4:25; 1 पतरस 2:24अ; याक. 2:24; मर. 5:20; प्रक. 19:8।
3. हमारी वस्तूपरक धार्मिकता के रूप में, मसीह ही वह जन है जिसमें हम परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं—रो. 3:24, 28; 4:25; 5:1, 9, 16, 18।
4. हमारी व्यक्तिपरक धार्मिकता के रूप में, मसीह ही वह जन है जो हमारे लिए ऐसा जीवन जीने के लिए हमारे अंदर निवास करता है जिसे परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहराया जा सकता है और जो परमेश्वर को हमेशा स्वीकार्य है—मत. 5:6, 20।

B. मसीह संतों में से जीया क्योंकि उनकी व्यक्तिपरक धार्मिकता उनका विवाह का वस्त्र बन जाती है—प्रक. 19:8:

1. हमारे उद्धार के लिए हमें जो धार्मिकता मिली है, वह वस्तूपरक है और हमें धर्मी परमेश्वर की माँग को पूरा करने में सक्षम बनाती है, जबकि जयवन्त होते संतों की धार्मिकता व्यक्तिपरक है और उन्हें जयवन्त मसीह की माँग को पूरा करने में सक्षम बनाती है—1 कुर. 1:30; फिलि. 3:9।
2. मत्ती 22:11-12 में विवाह का वस्त्र मसीह को दर्शाता है जिसे हम जीते हैं और जो हमारे दैनिक जीवन में हमारी श्रेष्ठ धार्मिकता के रूप में हमारे माध्यम से व्यक्त होता है—5:20; प्रक. 3:4-5, 18।

C. प्रभु की दुल्हन, उसकी पत्नी, ने "अपने आप को तैयार कर लिया है। और उसे यह दिया गया है कि वह महीन मलमल, चमकदार और स्वच्छ वस्त्र पहने; क्योंकि महीन मलमल संतों की धार्मिकता है"—19:7ब-8:

1. प्रकाशितवाक्य 19:8 स्पष्ट रूप से वस्त्र को धार्मिकता से जोड़ता है।
2. आयत 8 में *धर्मिकताएं* शब्द बहुवचन है और इसका अनुवाद "धर्मी कर्म" के रूप में किया जा सकता है।
3. धार्मिकता मसीह को हमारी धार्मिकता के रूप में संदर्भित नहीं करती है, जिसे हमने अपने उद्धार के लिए प्राप्त किया है—1 कुर. 1:30।
4. महीन मलमल हमारे जयवन्त होते जीवन, हमारे जयवन्त होते रहन-सहन को इंगित करता है।
5. महीन मलमल मसीह है जिसे हम अपने अस्तित्व से जीते हैं।

D. "धन्य हैं वे [जयवन्त होते संत] जो मेमने के विवाह भोज में बुलाए गए हैं"—प्रक. 19:9:

1. यहाँ मेमने का विवाह भोज मत्ती 22:2 में परिणय भोज है।
2. मसीह के विवाह भोज में बुलाए जाने का अर्थ है धन्य होना।
3. जयवन्त होते विश्वासी, जिन्हें मेमने के विवाह भोज में बुलाया जाएगा, वे मेमने की दुल्हन भी होंगे—प्रक. 19:7।

संदेश छ:

एक सामूहिक योद्धा के रूप में दुल्हन

पवित्रशास्त्र पठन: इफ. 6:10-20

I. इफिसियों 6:10 प्रकट करता है कि दुल्हन एक सामूहिक योद्धा है जो परमेश्वर के राज्य के लिए परमेश्वर के शत्रु के खिलाफ लड़ रही है:

A. जब मसीह के जयवन्त होते मसीह की प्रेमिका परमेश्वर का निवास स्थान बनने के लिए परमेश्वर के साथ एक होती है, परमेश्वर की नजरों में वह तिरसा के समान सुंदर और यरूशलेम के समान मनोहर; हालाँकि, शत्रु के लिए पताका फहराती हुई सेना के समान विस्मयकारी है—श्रेष्ठ. 6:4:

1. पताका लड़ने के लिए एक तैयारी को प्ररूपित करता है और एक चिह्न भी है कि विजय को जीत लिया गया है; एक विस्मयकारी सेना प्ररूपित करती है कि प्रभु के जयवन्त परमेश्वर के शत्रु, शैतान को भयभीत करते हैं।
2. सेना परमेश्वर के लोगों की पदावनति में जयवन्त बनने के लिए परमेश्वर के राज्य के लिए युद्ध लड़ते हैं जो प्रभु की बुलाहट का उत्तर देते हैं (प्रक. 2:7, 11, 17, 26; 3:5, 12, 21); अंतत:, जयवन्त सामूहिक रूप से मसीह से विवाह करने के लिए एक दुल्हन बन जाएंगे (19:7-9); अपने विवाह के बाद, यह दुल्हन मसीह, अपने पति के साथ साथ मसीह-विरोधी को उसके सभी अनुसरणकर्ताओं के साथ पराजित करने के लिए युद्ध लड़ने हेतु एक सेना बन जाएगी (आआ. 11-21)।

B. दुल्हन के रूप में कलीसिया परमेश्वर के इरादे में वास्तव में सामूहिक मनुष्य है, जो परमेश्वर को अभिव्यक्त करने और परमेश्वर के शत्रु के साथ निपटारा करने के दोहरे उद्देश्य को पूरा करेगा—उत. 1:26।

C. न केवल मसीह के अनंत उद्देश्य को पूरा किया जाना जरूरी है और मसीह के हृदय की चाह को संतुष्ट किया जाना जरूरी है, बल्कि परमेश्वर के शत्रु को पराजित किया जाना भी जरूरी है; इसके लिए, कलीसिया को एक योद्धा होना जरूरी है।

D. हमारी चाल परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए है, हमारा जीना मसीह की संतुष्टि के लिए है, और हमारा युद्ध परमेश्वर के शत्रु को पराजित करने के लिए है—इफ. 4:1; 5:2, 8; 6:10-11।

II. सहस्राब्दी के दौरान दौरान यीशु की साक्षी मसीह की दुल्हन है—वे जयवन्त जो मसीह के सह-राजा हैं—प्रक. 19:7-9; 20:4, 6:

A. प्रभु की पुन:प्राप्ति मसीह की दुल्हन की तैयारी के लिए है (19:7-9; 21:2); अंतत:, हम अद्भुत शूलम्मिन के अनुरूप बनाए जाएंगे, जो, सुलेमान की प्रतिलिपि के रूप में, मसीह की अर्धांगिनी, दुल्हन के रूप में नए यरूशलेम का महानतम और परम नमूना है (श्रेष्ठ. 6:13; प्रक. 21;2, 9-10; 22:17अ)।

B. शूलेम्मिन की तुलना परमेश्वर की दृष्टि में दो छावनियों, या दो सेनाओं (इब्रानी *महानैम*) के नृत्य से की गई है; याकूब ने परमेश्वर के स्वर्गदूतों, परमेश्वर की दो सेनाओं को देखने के बाद, उस स्थान का नाम महानैम रखा और अपनी पत्नियों, बच्चों और निज संपत्तियों को "दो सेनाओं" में विभाजित किया— श्रेष्ठ. 6:13; उत. 32:1-10:

1. दो सेनाओं का आत्मिक महत्व मजबूत गवाही है कि हम उसके माध्यम से विजयी से भी अधिक, हम "सर्वोच्च जयवन्त," होते हैं जो हमें मसीह की देह के सिद्धांत के अनुसार हमसे प्रेम किया—रो. 8:37; 12:5; व्य. 32:30; सभ. 4:9-12।
2. परमेश्वर उनको नहीं चाहता है जो अपने आपमें बलवान हैं; वह केवल निर्बल जनों को चाहता है, कमजोर जनों को, स्त्रियों और बच्चों को; वे जो जयवन्त होने योग्य गिने गए हैं वे कमजोर जन होंगे जो प्रभु पर निर्भर रहते हैं—1 कुर. 1:26-28; 2 कुर. 12:9-10; 13:3-5; श्रेष्ठ. 8:6।
3. परमेश्वर को एक ऐसे लोगों की जरूरत है जो उसके साथ एक हों, वे लोग जो उसके प्रति अधीन हों, जिसे गूँथे हुए बालों के द्वारा प्ररूपित किया गया है (1:11), और एक लचीली इच्छा के साथ उसके प्रति आज्ञाकारी हों, जिसे गले और आभूषणों की कतार के द्वारा प्ररूपित किया गया है (आ. 10)।
4. जब हम विचार करते हैं कि दिव्य प्रकाशन के उच्चतम शिखर तक कैसे पहुंचें, तो हमें अपने आप में नहीं बल्कि प्रेम, शक्ति, और दया के रूप में प्रभु पर निर्भर रहना होगा जो हमें दया, आदर, और महिमा का पात्र बनाता है—रो. 9:16, 21-23।

III. आत्मिक युद्ध आवश्यक है क्योंकि शैतान की इच्छा परमेश्वर की इच्छा के साथ विरोध में है—इफ. 1:5, 9, 11; मत. 6:10:

A. परमेश्वर का इरादा, परमेश्वर की इच्छा के अतिरिक्त, एक दूसरा इरादा, एक दूसरी इच्छा है, क्योंकि शैतान की इच्छा दिव्य इच्छा के विरूद्ध बनी है—यश. 14:12-14।

B. सारे युद्ध का स्रोत शैतान की इच्छा और परमेश्वर की इच्छा के बीच के विरोध में है।

C. आत्मिक युद्ध परमेश्वर के राज्य और शैतान के राज्य के बीच के विरोध का युद्ध है; स्वर्गों के राज्य को स्थापित किए जाने के लिए, आत्मिक लड़ाई की जरूरत है—मत. 12:26, 28; प्रक. 12:11.

D. हम सत्य के अनुसार और अनुग्रह के द्वारा चलते हैं, हम प्रेम और ज्योति में जीते हैं, और हम शैतानी इच्छा को वश में करने के लिए हैं—इफ. 4:1; 5:2, 8; 6:12।

IV. परमेश्वर के शत्रु से निपटने के लिए, हमें उस शक्ति की महानता से सशक्त होने की जरूरत है जिसने मसीह को मृतकों में से जिलाया और उसे स्वर्गीय स्थानों में बैठाया, आकाश की सभी दुष्ट आत्माओं से कहीं ऊपर—आ. 10; 1:19-22:

A. यह तथ्य कि हमें प्रभु में सशक्त होने की जरूरत है संकेत करता है कि अपने आप में हम शैतान और उसके दुष्ट राज्य के विरूद्ध आत्मिक युद्ध नहीं लड़ सकते हैं; हम केवल प्रभु में और उसके सामर्थ्य की शक्ति में ही लड़ सकते हैं।

B. सशक्त होने की आज्ञा हमारी इच्छा का अभ्यास करने की जरूरत को सूचित करती है, यदि हम आत्मिक युद्ध के लिए सशक्त होना चाहते हैं, तो हमारी अच्छा दृढ़ और अभ्यास की हुई होनी होगी—श्रेष्ठ. 4:4; 7:4।

V. कलीसिया और शैतान के बीच युद्ध हम जो प्रभु से प्रेम करते हैं और जो उसकी कलीसिया में हैं और स्वर्गीय स्थानों में दुष्ट शक्तियों के बीच युद्ध है—इफ. 6:12:

A. इस अंधकार के शासक, अधिकारी, और सांसारिक-शासक विद्रोही स्वर्गदूत हैं, जिन्होंने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह में शैतान का अनुसरण किया और जो अब संसार के राष्ट्रों के ऊपर स्वर्गीय स्थानों में राज करते हैं—कुल. 1:13; दान. 10:20।

B. हमें एहसास करने की जरूरत है कि युद्ध मनुष्यों के विरूद्ध नहीं है बल्कि स्वर्गीय स्थानों की दुष्ट आत्माओं, आत्मिक शक्तियों के विरूद्ध है।

VI. आत्मिक युद्ध एक वैयक्तिक मामला नहीं है, यह मसीह की दुल्हन का एक सामूहिक योद्धा होने का मामला है—इफ. 6:13:

A. कलीसिया एक सामूहिक योद्धा है, और विश्वासी एक साथ इस सामूहिक योद्धा को बनाते हैं; जब हम सामूहिक रूप से एक सेना बनाए जाते हैं, तो हम परमेश्वर के शत्रु के विरूद्ध लड़ने में योग्य हो जाएंगे।

B. परमेश्वर की रणनीति कलीसिया को अपनी सेना के रूप में शत्रु के विरूद्ध लड़ने के लिए इस्तेमाल करना है; शैतान की रणनीति हमें कलीसिया से परमेश्वर की सेना के रूप में अलग-थलग करना है।

C. परमेश्वर का सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र देह के लिए है, वैयक्तिकों के लिए नहीं; केवल सामूहिक योद्धा ही परमेश्वर का सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र पहन सकता है।

VII. आत्मिक युद्ध लड़ने के लिए, हमें परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र को पहनने की जरूरत है—आ. 11:

A. हमारे अस्तित्व में वास्तविकता के रूप में मसीह में परमेश्वर वो कमरबंध है जो हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व को आत्मिक युद्ध के लिए बलवंत करता है—आ. 14अ।

B. धार्मिकता का सीनाबन्ध जो हमारे विवेक को ढकता है और हमें शैतान के आरोपों से बचाता है हमारी धार्मिकता के रूप में मसीह है—आ. 14ब; 1 कुर. 1:30।

C. मसीह हमारे लिए परमेश्वर के साथ और संतों के साथ एक होने के लिए शांति है; यह शांति वो दृढ़ नींव है जो हमें शत्रु के विरूद्ध खड़े होने के लिए सक्षम बनाती है—इफ. 2:15; 6:15।

D. विश्वास शैतान की जलती ज्वालाओं के विरूद्ध एक ढाल है; मसीह ऐसे विश्वास का रचियता और सिद्धकर्ता है—आ. 16; इब्र. 12:2।

E. उद्धार का टोप जो हमारे मन को ढकता है वो बचाने वाला मसीह है जिसे हम अपने दैनिक जीवन में अनुभव करते हैं—इफ. 6:17अ; यूह. 16:33।

F. आत्मा की तलवार, जो आत्मा परमेश्वर का वचन है, हमारा सुरक्षात्मक हथियार है जिससे हम शत्रु को टुकड़ों में काटते हैं—इफ. 6:17ब।

G. प्रार्थना अद्वितीय, अत्यंत महत्वपूर्ण, और जैविक माध्यम है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र को लागू करते हैं, अस्त्र-शस्त्र की हर एक चीज को हमारे लिए एक व्यावहारिक रूप से उपलब्ध कराते हैं—आ. 18।

VIII. परमेश्वर का सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र पहनने के द्वारा, हम दुष्ट की रणनीतियों, दुष्ट योजनाओं के विरूद्ध खड़े होने में योग्य होते हैं—आआ. 11, 13-14:

A. मसीह के साथ बैठना उसकी सब कार्यसिद्धियों में सहभागी होना है, परमेश्वर के अनंत उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसकी देह में कार्य करना है, और परमेश्वर के शत्रु के विरूद्ध लड़ने के लिए उसकी शक्ति में खड़ा होना है—2:6; 4:1; 5:2, 8; 6:11, 13-14।

B. शत्रु के विरूद्ध लड़ने में, सबसे महत्वपूर्ण बात खड़े होना है; सब कुछ पूरा करके, हमें अंत तक खड़े रहने की जरूरत है।

IX. हम सबको देखने की जरूरत है कि आज प्रभु की पुन:प्राप्ति में हम एक युद्धक्षेत्र में हैं; हमें शैतान की स्वर्गीय सेनाओं के विरूद्ध लड़ने के लिए प्रभु के साथ सहयोग करना होगा ताकि हम मसीह की देह के निर्माण के लिए और मसीह की दुल्हन की तैयारी के लिए अधिक से अधिक मसीह को हासिल कर सकें, परमेश्वर के राज्य को स्थापित और फैला सकें ताकि मसीह पृथ्वी पर उत्तराधिकार करने के लिए वापस आ सके।